अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला मंडल सम्मेलन में संबोधन

जय महेश, अखिल भारतीय माहेश्वरी महिला मंडल के अखिल भारतीय प्रतिनिधि सम्मेलन में देश भर से आए महिला प्रतिनिधियों का, मैं कोटा का जनप्रतिनिधि होने के नाते आपका हार्दिक अभिनंदन करता हूं, स्वागत करता हूं।

इस सम्मेलन में समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष, जिन्होंने एक लंबा समय इस समाज को दिया है। समर्पण, त्याग और सेवा से संगठनात्मक ढांचे को खड़ा किया है, ताकि समाज के माध्यम से, समाज में सामाजिक आर्थिक परिवर्तन हो। देश के उन समाजों में आर्थिकपरिवर्तन हो सामाजिक-, उसमें उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है।

इस सम्मेलन में इसके पूर्व अध्यक्ष श्री रामपाल सोनी जी, उपाध्यक्ष माननीय रामकृष्ण बिरला जी, गोविंद माहेश्वरी जी और इस महिला सम्मेलन के अध्यक्षा, जो लंबे समय से इस सम्मेलन की तैयारी कर रही हैं, जिन्होंने देश भर की महिलाओं को जोड़ने के लिए नई दिशा, नया संकल्प और नया विचार दिया है, उनकी सहयोगी मंजू बांगर जी, ममता मोदानी जी, किरण जी सभी पदाधिकारीगण का मैं बहुतबहुत- स्वागत करता हूं, अभिनंदन करता हूं।

अभी सभी वक्ताओं ने कहा है कि हम भगवान महेश की संतान हैं। जब हम भगवान महेश की संतान हैं, तो वे देवों के देव महादेव हैं। वे महादेव क्यों बनें और हमें महादेव की संतान क्यों कहा गया, यह विचार मंथन का समय है। क्योंकि उस समय जब समुंद्र मंथन हो रहा था, तो मंथन में विष भी निकला और अमृत भी निकला।

उस समय विष कौन पिए, तो देवों के देव महादेव, नीलकंठ ने विष पिया, इसलिए वे देवों के देव महादेव कहलाए। देश के अंदर बहुत अभाव, वंचित और गरीब व्यक्ति हैं, जिनकी दर्द, पीड़ा असहनीय है, उनको अपना दर्द, पीड़ा समझना और वंचित गरीब लोगों के लिए समर्पण भाव से सेवा करनी चाहिए। ये हमारे समाज के संस्कार और चरित्र होने चाहिए।

इन्हीं संस्कार और चरित्र के कारण, वे संख्या में कम हो सकते हैं, जैसा कि सोनी जी ने कहा है, लेकिन कार्य की श्रेष्ठता के कारण आचरण के कारण, नैतिकता के कारण और हमारे समाज का सबसे बड़ा लक्ष्य है, तब तपस्या और समर्पण, उस श्रेष्ठता के कारण, कम संख्या में होने के बाद भी समाज में यथोचित सम्मान है। सभी आपका सम्मान करते हैं।

क्योंकि आप महिला संगठन में काम कर रही हैं। आज आपने यहां शंखनाद किया है। आपने शंखनाद का विषय भी यहां रखा है, वह अपने आप में पूरे समाज को ही नहीं, बल्कि पूरे देश को जोड़ने का आपने शंखनाद किया है।

सशक्त नारी, समृद्ध समाज। नारी हमेशा सशक्त रही है। इस दुनिया में जब हम प्राचीनतम इतिहास देखते हैं, तो प्राचीनतम इतिहास में भी नारी सशक्त रही है। हम नारी की पूजा करते हैं। अभी हमने नवरात्रा का पर्व मनाया है।

नवरात्रा का पर्व एक ऊर्जा और शक्ति प्राप्त करने का पर्व है। हमें शक्ति कहां से मिलती है, हमें शक्ति माता से मिलती है, देवी से शक्ति मिलती है। इसलिए शक्ति और सामर्थ्य हमारे भारतीय संस्कार में हमेशा से हैं। इस समाज की प्राचीनतम व्यवस्था के अंदर भी हमेशा हमने नारी की पूजा की है, शक्ति का निर्माता नारी को माना है।

इसी तरह से अगर हम 17वीं-18वीं शताब्दी में भी देखें तो वर्ष 1857 की पहली लड़ाई, आजादी की लड़ाई भी झांसी की रानी ने लड़ी, जो एक महिला थीं। उसके बाद जो समाज में परिवर्तन हुए, उन सामाजिक परिवर्तन में कहीं न कहीं महिलाओं का योगदान है। **एक दौर बीसवीं शताब्दी का आया था, उस समय सामाजिक कुरीतियों के कारण महिलाओं पर कई बंदिशें थीं, लेकिन उस समय भी महिला सशक्तिकरण और महिलाओं को शिक्षा देकर सभी सामाजिक कुरीतियों के लिए अनेक समाज सुधारकों ने उस समय शंखनाद किया।**

बीसवीं शताब्दी के अंदर भी उस शंखनाद से समाज को नई दिशा दी और एक समृद्ध समाज की ओर बढ़ने की दिशा दी।

जब हम 21वीं सदी की चर्चा करते हैं, तो भारत में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जिस क्षेत्र में महिलाएं नेतृत्व नहीं कर रही हैं। देश के महामहिम राष्ट्रपति से लेकर विज्ञान, सामाजिक, सभी क्षेत्रों में महिलाएं समाज में प्रगति कर रही हैं। हमारे युवा छात्राएं प्रगति कर रही हैं। अंतरिक्ष से लेकर जमीन तक अगर भारत में नेतृत्व करने की क्षमता है, तो वह महिलाओं में है।

इसलिए हम समृद्ध हैं, लेकिन इसके साथ हमें संपूर्ण समाज को समृद्ध बनाना है। जहां आज भी सामाजिक कुरीतियों की जड़ है, जहां सामाजिक कुरीतियों के कारण महिलाओं को बाहर निकलने नहीं दिया जाता है। महेश की संतान होने के कारण हमारी जिम्मेदारी हो जाती है कि समाज में नारियों को समृद्ध बनाने में योगदान रहे। जब यह योगदान होगा, तब हमारा संगठन का ढांचा मजबूत होगा।

संगठन का ढांचा मजबूत होने के कारण, एक मजबूत ढांचा, एक सांस्कारिक ढांचा, एक समर्पण, सेवा का ढांचा और एक संकल्प का ढांचा तैयार होगा। हमें अपने संगठन के ढांचे को इतना मजबूत करना है कि संपूर्ण देश में जब कभी कोई महिला नेतृत्व करने के लिए आगे आए, तो उसमें माहेश्वरी समाज की महिलाओं का नाम आगे आए, यह हमारा संकल्प होना चाहिए।

यह दो दिनों का अधिवेशन है। आप सभी विषयों पर चर्चा, संवाद करें। इसमें सहमति, असहमति हो सकती है, लेकिन चर्चा से जो निष्कर्ष निकलता है, उससे कल्याण होता है। हमने संसद में 75 साल की लोकतंत्र की यात्रा में यही पाया है।

हमारा लोकतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। हम कह सकते हैं कि दुनिया की सबसे बड़ी डेमोक्रेसी और डेमोग्राफी कोई है, तो वह भारत ही है।

हम कह सकते हैं कि हमारा लोकतंत्र जनता के द्वारा चुना हुआ लोकतंत्र है, जिस सहज रूप से हमारे लोकतंत्र की प्रतिष्ठा है, जिस तरीके का गौरव और सम्मान है, आज दुनिया के अंदर हमारे लोकतंत्र को जननी माना जाता है, क्योंकि भारत की जीवनशैली, आचरण और विचार में ही लोकतंत्र रहा है।

हमारे गांवों और नगरों में प्राचीनतम पद्धति के अंदर भी लोकतंत्र में हम आपस में बैठकर चर्चा करके सामूहिक निर्णय करते थे। आज लोकतंत्र की 75 साल की यात्रा में भी जो कुछ भी इस देश में सामाजिक

आर्थिक परिवर्तन किए गए हैं, उनमें हमारी सबसे बड़ी ताकत लोकतंत्र है। क्योंकि संविधान बनाते हुए निर्माताओं ने कहा था कि जनता के द्वारा, जनता की सरकार इस देश के सामाजिक आर्थिक विकास में योगदान के लिए काम करेगी।

लोकतंत्र की लगातार 75 साल की यात्रा में हमने ऐसा मुकाम हासिल किया है कि दुनिया में हम श्रेष्ठतम राष्ट्र बनने जा रहे हैं।

श्रेष्ठतम राष्ट्र बनने में हमारी 1.4 बिलियन जनता की भागीदारी है। जब मैं किसी देश में जाकर चर्चा करता हूं कि हमारी आबादी 1.4 बिलियन है, तो वे चकित हो जाते हैं। जब मैं चर्चा करता हूं कि हमारे यहां 90 करोड़ मतदाता मतदान करते हैं, तो वे चकित हो जाते हैं।

जब मैं यह कहता हूं कि एक मैम्बर ऑफ पार्लियामेंट 20-25 लाख लोगों का प्रतिनिधित्व करता है, तो पता चलता है कि उस देश की आबादी 10-20 लाख है, तो यह हमारी ताकत है।

इस ताकत के आधार पर हम कभी कहते थे कि जनसंख्या अभिशाप है, लेकिन एक मजबूत सरकार, मजबूत नेतृत्व और क्षमतावान नेतृत्व, किस तरीके से समाज के सामाजिकमें परिवर्तन कर सकता आर्थिक जीवन-है, यह हमने एक दशक की यात्रा में माननीय प्रधान मंत्री, नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देखा है। उन्होंने दुनिया में बताया है कि किस तरह से डेमोग्राफी और डेमोक्रेसी के आधार पर ही हम दुनिया के सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र बनेंगे।

आज हम दुनिया के किसी भी देश में चले जाएं, कितने ही बड़े विकसित राष्ट्र में चले जाएं, उस विकसित राष्ट्र के अंदर भी, उस विकसित राष्ट्र की प्रगति, खुशहाली और नए इनोवेशन एवं नए रिसर्च करने की ताकत भारत के नौजवान के कारण है।

आप भारत के नौजवान की बौद्धिक क्षमता हर जगह पाएंगे, चाहे आप दुनिया के किसी भी देश में चले जाएं। दुनिया के बड़े देशों में आईटी के प्रोफेशनल्स मिलेंगे, तो वे भारत के नौजवान मिलेंगे, वहां डॉक्टर्स मिलेंगे, तो वे भारत के नौजवान मिलेंगे, वहां चार्टड अकाउंटेंट मिलेंगे, तो वे भारत के नौजवान मिलेंगे।

दुनिया की जितनी बड़ी कंपनियां हैं, उनके सीईओ को देखेंगे, तो वे भारत के मिलेंगे। उन कंपनियों को आर्थिक रूप से संचालन करना, उनको आगे ले जाने का काम भारत के नौजवानों ने किया है।

यह भारत की समृद्ध शक्ति है। इसलिए समृद्ध शक्ति में जब हम सभी को मिल कर काम करना चाहिए। भारत में इस सामाजिक व्यवस्था से ही सामाजिक आर्थिक परिवर्तन हुए हैं। हमारी जो सामाजिक व्यवस्थाएं थीं, वे हमारे आपस में मिल कर अपने अपने समाज में हम किस तरीके से सामाजिक आर्थिक परिवर्तन कर सकते हैं, वंचित और गरीब लोगों का उद्धार करके उनको सबके समकक्ष खड़ा कर सकते हैं, यह हमारी सामाजिक व्यवस्था का अंश है।

इसलिए संपूर्ण समाज को दिशा देने की माहेश्वरी समाज की बहुत बड़ी जिम्मेवारी हो जाती है। हम अपने संगठन के ढांचे को इतना सशक्त और मजबूत करें कि उस जिले के अंदर, गांव के अंदर, ढाणी के अंदर जितनी भी महिलाएं हैं, उनका नेटवर्क इतना मजबूत रहे, ताकि जब कभी आपदा और संकट आए, तो उस आपदा और संकट के समय, पूरे देश में आपदा और संकट एवं चुनौतियों के समय सबसे पहले माहेश्वरी महिला समाज की महिलाएं खड़ी रहें।

आजादी के पहले की लड़ाई में भी माहेश्वरी समाज का योगदान था। आजादी के बाद भी देश के निर्माण में माहेश्वरी समाज का योगदान है। आजादी की लड़ाई के बारे में आप जितना इतिहास पढेंगे, राजाओं के राज में भी भामाशाह, जब कभी उस देश के राजा के पास राष्ट्र को बचाने की समस्या आती थी, तो भामाशाह के रूप में वे देश की रक्षा के लिए अपना सब कुछ खो देते थे।

आजादी की लड़ाई में टाटा हो या बिरला हो, कितने भी बड़े उद्योगपति हैं, उन्होंने अंग्रेजों के जुल्म के खिलाफ भी आजादी की लड़ाई लड़ने वालों को सहयोग दिया, धन दिया और देश की आजादी की लड़ाई में सहयोग किया।

देश में चाहे कलकारखाने हों-, धर्मशाला हो, अस्पताल हो या शिक्षा हो, सभी क्षेत्रों में आजादी के पहले भी और आजादी के बाद भी इन समाजों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इसलिए हमारी जिम्मेदारी हो

जाती है कि 75 साल की लोकतंत्र की यात्रा में जब समाज ने बहुत विकास किया है, हम अपना कंट्रीब्यूशन करते चलते हैं।

बदलते हुए नए परिप्रेक्ष्य में भारत में हमारा क्या योगदान हो सकता है, यह हमारे लिए चिंतन का विषय है कि हम बदलते हुए नए भारत के अंदर किस तरीके से हर महिला का सशक्तिकरण करें, हर महिला को रोजगार देने की जिम्मेदारी हमारी है।

चांडक जी ने सही कहा था कि हम रोजगार देने वाले बनें, रोजगार प्राप्त करने वाले नही बनें, हमें इस दिशा को परिवर्तन करना होगा। इसलिए जब हमारा संगठन मजबूत होगा, तो उस संगठन में एक जिला, एक प्रोडक्ट, उस प्रोडक्ट के अंदर हम किस तरह से वैल्यू एडिशन कर सकते हैं, उसका एक बेहतरीन मार्ग दे सकते हैं। गरीब और वंचित महिलाओं के लिए काम का एक नेटवर्क तैयार करें, उनके प्रोडक्ट को तैयार करने का काम करें। उन प्रोडक्ट्स को सेल करने का काम माहेश्वरी महिला संगठन के पदाधिकारी करें। इसी तरह से महिलाओं को नया इनोवेशन और नया रिसर्च करने का अवसर प्रदान करें।

आज भारत में 70 हजार स्टार्टअप्स हैं। देश और विश्व में जितनी भी चुनौतियां हैं, एक व्यक्ति के सामान्य जीवन में आने वाली हर दिक्कत का समाधान हमारे नौजवानों ने स्टार्टअप के माध्यम से किया है। आप दुनिया में देख लें, आने वाले समय में दुनिया के हर क्षेत्र के समस्याओं का समाधान भारत के नौजवान स्टार्टअप के माध्यम से करेंगे।

आज आप मेडिकल के क्षेत्र को देख लें, जब मैं दुनिया के किसी कोने में जाता हूं और पूछता हूं कि दवाइयां कहां से आ रही हैं, तो पता चलता है कि वे भारत से आ रही हैं। यहां डॉक्टर्स कहां से आते हैं, तो वे भारत से आते हैं। यह हमारी ताकत है। इस ताकत को बढ़ाने में हमारा भी कहीं न कहीं योगदान होना चाहिए। हम युवा महिलाओं के लिए नया इनोवेशन, नया स्टार्टअप के लिए एक प्लेटफॉर्म बनाएं। समाज जगह जगह पर उन लोगों को संगठित करके एक बेहतरीन स्टार्ट अप बनाने का काम करे, ताकि इसका सोल्यूशन कर सकें।

इस तरह से हमें कुछ सामाजिक कार्य भी करना पड़ेगा। हमारा लक्ष्य और लक्ष्य प्राप्त करने की सीमा, इस पर संगठन में चर्चा हो, संवाद हो। हम किस लक्ष्य के लिए चले थे और उस लक्ष्य को कहां तक प्राप्त कर लिया है, उस लक्ष्य को प्राप्त करने में जो कुछ चुनौतियां कठिनाइयां आई हैं, उनका समाधान करते हुए लक्ष्य की ओर बढ़ते जाएं।

दुनिया में अपने कार्यों की विशेषता के आधार पर उस समाज में जितने भी अभावग्रस्त, वंचित अगर गरीब व्यक्तियों को एक मात्र कोई सेवा के रूप में नजर आए, एक मात्र कोई सॉल्युशन के रूप में नजर आए, तो वहां की माहेश्वरी महिला मंडल की कार्यकर्ता नजर आएं, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हमें इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए काम करना चाहिए।

अध्यक्ष जी ने जो बताया है, वह चिंता सही है। मैं भी देखता हूं कि इन चिंताओं को मंथन करने की आवश्यकता है। आज शादी के लिए कोई शॉदी डॉट कॉम पर जाता है, कोई शादी कराने वाले से पूछता है कि कितना का पैकेज है, वे कहां चले गए। हमारे बड़ेबुजुर्ग जो रिश्ते बनाते- थे, वे टूटते नहीं थे। आज वह स्थिति कहां चली गई? उन स्थितियों पर भी हमें विचार करना पड़ेगा।

हमारे परिवारों को सुसंस्कृत बनाना, संस्कारवान बनाना, दुनिया में जितने भी भौतिक संसाधन और इनका उपयोग करने वाले जितने भी देश हैं, आज अवसादग्रस्त और चिंतित हैं, उनको अपने अवसाद और चिंता को कम करने के लिए भारत की संस्कृति में आना पड़ता है।

हम किस दिशा की ओर जा रहे हैं? भौतिक संसाधनों की ओर दौड़ने, पश्चिम देशों की ओर आगे जाने का एक दौर चला था। आज पश्चिम के सभी देश अवसाद ग्रसित और चिंतित हैं। उनको अध्ययन के लिए कोई धरती मिलती है, तो वह भारत की धरती मिलती है। हमें उसी संस्कृति संस्कार को लाना चाहिए।

हमारे प्रधान मंत्री जी ने सही कहा है कि हमें पांच बिन्दुओं पर चिंता करनी चाहिए। विरासत की संस्कृति, हमारे संस्कार आज भी जीवित रहने चाहिए।

हमारा परिवार एक वसुधैव कुटुम्बकम का परिवार होना चाहिए, जिसमें हम केवल अपनी ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व की चिंता करें, संपूर्ण समाज की चिंता करें। इसी तरह से समाज में शादी और फिजूलखर्च के बारे में भी संगठनों को चिंता करनी चाहिए। उन्हें कोशिश करनी चाहिए कि हम नई दिशा की ओर बढ़ें।

किस तरह से सामूहिक विवाह की ओर छोटे छोटे समाज बढ़ रहे हैं, उसे देखें। मैं कई समाज में देखता हूँ कि छोटे छोटे समाज आज सामूहिक विवाह की ओर बढ़ रहे हैं।

जब समृद्ध समाज, धन शक्ति से समृद्ध समाज, सामूहिक विवाह और इस सामाजिक परिवर्तन की पहल करेगा, तो समाज उसका मार्गदर्शन लेगा, समाज उसे दिशा देगी। इसलिए इन पहलों को करने की आवश्यकता है।

मैं सोचता हूं कि दो दिवस के इस महिला सम्मेलन के अंदर आप इन सभी विषयों पर चर्चा-संवाद करेंगे और उसका जो निष्कर्ष निकलेगा, उसका जो पेपर बनेगा, हमने क्या लक्ष्य तय किए थे, हम कहां तक पहुंचे। लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जो-जो चुनौतियाँ आती हैं, उनका समाधान करते जाएं एवं लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ते जाएं।

हमारी शक्ति, सामर्थ्य, सोच और संस्कृति, भगवान शिव ने हमें महेश की संतान रूप में पैदा किया है, हम इसका उपयोग करें। आप सभी को बहुत-बहुत धन्यवाद। जय हिंद।